Day 14
Paper 2

Indian Economy at the time of Independence

भारतीय अर्थव्यवस्था से अर्थ उन सभी क्षेत्रों, कारखानों, दुकानों, बैंकों, खानों, स्कूल, कालेज आदि से है जो लोगों को रोजगार देते है तथा वस्तु एवं सेवाओं का उत्पादन करते है। भारत को स्वतंत्रता 15 अगस्त 1947 को मिली। उस समय भारतीय अर्थव्यवस्था की क्या हालत था इसकी जानकारी हम निम्न मदों से स्पष्ट कर सकते है।

① कृषि — भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान था लेकिन ब्रिटिश शासन में इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया बल्कि खाद्यान्नों के स्थान पर वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन पर ब्रिटिश शासन ने जोर दिया जिससे भारत में खाद्यान्नों की कमी हो गई। स्वतंत्रता के समय भारत में खाद्यान्नों की बहुत कमी थी जिन्हे विदेशों से आयात किया जाता था। उस समय भारत में जमींदारी प्रथा लागू थी जिससे यहाँ किसानों को भारी रकम जमींदारों को देनी पड़ती थी इससे किसानों के पास रखने के लिए बहुत कम ही बच पाता था साथ ही किसानों को कृषि का कार्य करने के लिए साहूकारों व महाजनों पर निर्भर रहना पड़ता था। इससे उन किसानों की दशा स्वतंत्रता के समय बहुत ही दयनीय थी। उन पर भारी ऋण का बोझ भी था।

② उद्योग — ब्रिटिश शासन की शुरुआत से पूर्व भारतीय उद्योगों का बाजार विदेशों में बहुत ही अच्छा था। उस समय भारत मुख्य रूप से सूती व रेशमी वस्त्रों का निर्यात करता था। लेकिन अंग्रेजों की नीति के कारण विदेश की सभी वस्तुएं भारत में आने लगी। इस प्रकार भारत तैयार वस्तुओं को आयात करने लगा और कच्चे माल को निर्यात करने लगा। यद्यपि संरक्षण मिलने के कारण भारत में कुछ उद्योग तेजी से पनपने लगे थे, लेकिन पूंजी की कमी, श्रमिकों की कुशलता में कमी, तकनीकी कर्मचारियों आदि की कमी से भारतीय उद्योग तेजी से विकास नहीं कर सके। स्वतंत्रता के समय भारत की राष्ट्रीय आय में उद्योगों का हिस्सा केवल 16-17 प्रतिशत ही था। उस समय यहाँ सूती वस्त्र की अनेक मिलें थी साथ ही यहाँ हैण्डलूम उद्योग भी था। कुछ चीनी मिल, लोहा एवं सीमेंट आदि के भी थे। स्वतंत्रता के समय यहाँ कुटीर उद्योग व लघु उद्योग भी थे जो सूती व रेशमी वस्त्र बनाते थे।

③ आधारित ढांचा — किसी भी देश का विकास उस देश की कृषि एवं उद्योग पर आधारित होता है। कृषि के लिए शक्ति, सिंचाई परिवहन इत्यादि की आवश्यकता होती है तो उद्योग के लिए मशीनरी, विपणन, सुविधा, परिवहन आदि की। यदि कोई देश तेजी से विकास करना चाहता है तो उसे उस आधारभूत ढांचे का विकास अपने देश में तेजी से करना होगा। सामान्यतः आधारभूत ढांचे में शक्ति, परिवहन, संदेशवाहक, बैंक, वित्त, विज्ञान व तकनीक तथा सामाजिक मद जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि का होना

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner

आवश्यक है।

स्वतंत्रता के समय उपरोक्त सभी आधारभूत ढाँचे की कमी थी, यहाँ शक्ति पर्याप्त मात्रा में नहीं थी। यद्यपि कोयले का उत्पादन हो रहा था लेकिन तेल, गैस, सूर्य शक्ति आदि तो कल्पना से परे थी। परिवहन माध्यम से माल व मनुष्य का आवागमन सुलभ हो जाता है। उस समय सड़के भी बहुत कम थी यद्यपि रेलों की स्थापना हो चुकी थी लेकिन वे सीमित स्थानों तक ही कार्यशील थीं।

संक्षेप में स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था ब्रिटेन की एक कॉलोनी का रूप ले चुकी थी। कृषि उदास थी, किसान गरीब थे कृषि उत्पादकता संसार में सबसे कम थी। संगठित उद्योग थोड़े थे लेकिन बड़े शहरों में केन्द्रित थे। भारी एवं आधारभूत उद्योग नहीं थे।

स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएं

(1) औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था — औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था से अर्थ ऐसी अर्थव्यवस्था से है जो दूसरे देश से जुड़ी है तथा जिसे शासक देश के आदेशों का पालन करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में जब एक देश की अर्थव्यवस्था दूसरे देश के द्वारा शासित होती है तो उसे औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था कहते हैं औपनिवेशिक को उपनिवेशी भी कहा जाता है ऐसा उस समय होता है जबकि शासक देश का अपने अधीन देश पर राजनीतिक प्रभुत्व होता है। उसे अपने शासक देश का आदेश मानना पड़ता है सामान्यतया शासक देश पक्का माल बनाते हैं और उस माल की खपत के लिए शासित देशों को अपना बाजार बनाते हैं भारतीय अर्थव्यवस्था औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था थी क्योंकि इसकी अर्थव्यवस्था पर ब्रिटेन का अधिकार था। एक औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में कुछ विशेषताएं पाई जाती है जो निम्न है।

(2) कच्चे माल के स्रोत — शासित देश शासक देश के लिए कच्चे माल के स्रोत माने जाते हैं जिससे कि वे अपने देश में उद्योग चला सकें। जिन शासित देशों में खनिज सम्पत्ति होती है वहां भी उद्योग स्थापित नहीं हो पाते हैं शासक देश खनिजों को कच्चे माल के रूप में अपने देश में ले जाते हैं और वहां बड़े बड़े उद्योग खनिजों के लिए स्थापित कर लेते हैं। इस कार्य के लिए शासक देश इन देशों में रेल एवं सड़कों का जाल बिछाते हैं जिससे उन्हें कच्चा माल बन्दरगाहों तक पहुंचाने में आसानी रहे।

(3) शोषण — औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में शासक देश के प्रतिनिधि खूब लूट-खसोट करते हैं। उनकी यह तरीका अत्यधिक मुनाफाखोरी का होता है इसके लिए वे अपनी वस्तुओं को अधिक से अधिक मूल्य पर अपनी कालोनियों में बेचते है।